(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)
NAVJYOT / Vol. XV / Issue – II ISSN 2277-8063

हिन्दी के सच्चे नायक : प्रवासी साहित्यकार

सहा. प्रा. संजीवनी संदीप पाटील,
हिंदी विभागाध्यक्षा,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान
महाविद्यालय,गडहिंग्लज.

प्रस्तावना :

आदिकाल से मनुष्य सुख-सुविधाओं की तलाश में भटकता रहा है। पहले वह फल इकट्ठे करना, शिकार करना आदि कारणों से इधर-उधर भटकता रहता था। जब उसे खेती करना तथा आग जलाना आने लगा उस समय वह एक जगह पर टिक गया। जमीन का बंजर होना, प्राकृतिक आपदाओं का आना, हमला होना ऐसी स्थिति में वह उस स्थान से दूसरे स्थान पर जाने लगा। वर्तमान संदर्भ में 'प्रवासी' का अर्थ भी वही है। आज भी मनुष्य अपना गाँव, घर, देश छोड़कर दूसरे देश में जाकर रहता है। बहेतर जिंदगी एवं सुख-सुविधाओं की तलाश में घुमता रहता है। भारत से बाहर विदेश में जाकर रहनेवाले लोग ही 'प्रवासी भारतीय' है। उनके द्वारा लेखन करना 'प्रवासी साहित्य' कहलाता है। विदेश गए भारतीय अपने साथ भारत की संस्कृति, भाषा लेकर गए थे। वहाँ उन्होंने अपनी भाषा में अपने विचार, अभिव्यक्ति अन्य भारतीयों तक पहुँचाने का प्रयास किया। उनके इस प्रयास से ही 'प्रवासी साहित्य' का जन्म हुआ।

भूमिका :

प्रवासी साहित्यकार दुनिया के अलग-अलग देशों में रहकर भी मातृभाषा की साधना करते रहते है। सच में वे हिंदी के नायक है। भारतीय संस्कृति और भाषा के प्रचारक बनकर वे हमारे सम्मुख आ रहे है। हिंदी को विश्वभाषा बनाने में सहायक बन रहे हैं। लेकिन आज भी वे हिंदी साहित्य की मुख्यधारा से जुड़ नहीं पाए हैं। 'प्रवासी' शब्द ही उनका परिचायक बना हुआ है। इसी वेदना को लेकर आज भी वे तन-मन से हिंदी की साधना कर रहे हैं।

NAVJYOT / Vol. XV / Issue – II ISSN 2277-8063

प्रवासी साहित्य :

प्रवासी भारतीय और प्रवासी साहित्य दो अलग-अलग चीजें हैं। कुछ लोग दोनों को एक ही मानने की तथा एक-दूसरे के साथ जोड़ने की गलती करते है। इसलिए लंदन के वरिष्ठ साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा जी का मंतव्य है, 'प्रवासी साहित्य की परिभाषा को समझना जरुरी है। आलोचकों को भी नई दीक्षा लेनी होगी, तभी वह प्रवासी साहित्य को समझ पाएँगे।'[1]

प्रवासी लेखन के तीन स्तर है। पहले स्तर में वह लेखक है जो भारत की याद में लिख रहे है। दूसरे स्तर में वे जिस देश गए है उसे समझने तथा वहाँ की सूचनाएँ बताने के लिए लिख रहे है। तीसरे स्तर क लेखक अपनाए देश को अपना समझकर लिख रहे हैं। वैसे प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी विशिष्टता को सुरक्षित रखा है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी कविताओं के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

नायक-प्रवासी साहित्यकार :

हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति पर गर्व करते हुए सुशीलकुमार शर्मा अपनी कविता 'अपनी जड़ों से दूर' में कहते है-

'प्रवासी / अपनी जड़ों से दूर/बरगद की भांति फैलते हैं/ और उन जड़ों को सींचते हैं/भारत के संस्कारों के पानी से।'[2]

अर्थात प्रवासी दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न रहे वे हमेशा ही अपनी धरती, भाषा, संस्कार को याद करते है। अपनी जड़ों को मजबूत करते हुए वे अपने संस्कार दुनिया को दिखाते है। अपनी भाषा पर गर्व करते वे कहते है,

'प्रवासी/ करते हैं अपनी भाषा पर गर्व / उसको आचरण में पिरोते हैं / विदेश में प्रवासी होते हैं / भारत से भी ज्यादा भारतीय।'[3] मतलब विदेशी भाषा के बीच रहते हुए भी वे अपनी भाषा में ही बातचीत करते हैं। जिसकारण विदेशी उन्हें 'भारतीय' से पहचानते है। यह दुख भी है कि भारत से

अधिक भारतीय उन्हें विदेशी मानते हैं जब कि भारतवासी उन्हें 'प्रवासी भारतीय' ही समझते हैं। कविता तो आत्मा की झंकार होती है। कवि के हृदय की भाषा, भावना को उजागर करती है। कविता के माध्यम से ही सुशीलकुमार शर्मा जी अपनी भावना-संवेदना को प्रकट करते है।

अपने देश-परदेश की यादों को जीवंत करती बहुचर्चित प्रवासी रचनाकार सुधा ओम दींगरा अपने 'धूप से रुठी चांदनी' इस काव्यसंग्रह में दिखाई देती है,

'विस्मृतियों के गर्भ से / यादों की अंजुरी भर लाई हूँ / कुछ यादें टिकी हैं इसमें / कुछ रिझ रहीं हैं....'[4] जब दिल में मनोभावों का तहलका मचता है, मन डावांडोल होता है। विदेश की धरती पर परायापन महसूस होता है। उस समय कविता निर्झर की तरह बहती रहती है। हिंदी भाषा से अपना लगाव दिखाते हुए डॉ. अंजना संधीर जी कहती है,

'हिंदी मेरी साँसों की भाषा है, भला साँस लेना भी भूलता है कोई?'[5] प्रवासी जीवन की अनगिनत समस्याओं को झेलती कवयित्री अपनी भाषा से साँस की तरह जुड़ी है। जिसप्रकार मनुष्य बिना साँस के एक पल भी जीवित नहीं रह पाता ठीक उसी तरह प्रवासी भारतीय अपनी भाषा के बिना जीवित नहीं रह सकते। सही मायने में वे ही सच्चे अर्थ में हिंदी का प्रचार प्रसार कर रहे है। एक ओर भारत की मिट्टी में रहनेवाले भारतीय अपनी ही मातृभाषा, राष्ट्रभाषा का विरोध कर रहे हैं। अपनी भाषा से अधिक विदेशी भाषा को अपना रहे है। तो दूसरी ओर अजनबी, विदेशी धरती पर अपनी भाषा से अपनी पहचान बनाते प्रवासी भारतीय दिख रहे हैं। प्रवासी भारतीय भारत से दूर होते हुए भी तन-मन से भारत से ही जुड़े है।

प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनूदित्त साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का निर्माण हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी के चलते आज यह साहित्य अधिकाधिक लोगों तक पहुँच भी रहा है। इस कारण ही आज कई संगोष्ठियों में इसी विषय को केंद्र में रखकर विचार-विमर्श किया जा रहा है। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के हिंदी विभाग की ओर से 'प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों' पर अनुसंधान संपन्न हुआ है। कुछ शोधछात्र अभी भी कार्यरत है।

एक समय ऐसा था जब प्रवासी साहित्य के बारे में लोग अनभिज्ञ थे। हमेशा ही उन्हें नकारात्मक नजरिए से देखते थे। पर आज सूचना प्रौद्योगिकी के कारण प्रवासी साहित्य की जानकारी लोगों को मिल रही है। इसी साहित्य के माध्यम से विदेशी धरती पर रहनेवाले भारतीय अपनी आपबीती अपनों तर पहुँचा रहे है। हम उनकी आँखों से विदेश देख रहे है। मजदूरी, शोषण, पारिवारिक तनाव आदि सभी बातों से अवगत करा रहे है। प्रवासी साहित्य के संदर्भ में डॉ. अजय नावरिया का मंतव्य है, 'भूमंडलीकरण को कारण हिन्दी के लिए बहुत सारे अवसर खुल गए हैं। आज विश्व में हिन्दी की अलग पहचान है। प्रवासी साहित्य ने विश्व को एक सूत्र में जोड़ने का काम किया है। जो मुख्यधारा का साहित्य है।'[6] पिछले कुछ दशकों से प्रवासी साहित्य का विकास बडी तेजी से हुआ है। इसमें प्रवासी साहित्यकारों का योगदान रहा है। आज संपूर्ण विश्व सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषाओं में हिंदी का होना भी इसी का परिणाम है।

अपने वतन से, अपनी मिट्टी से दूर रहते हुए भी प्रवासी भारतीय अपनी संस्कृति, भाषा से जुड़े है। न केवल वे बल्कि अपने आस-पास के विदेशी लोगों से भी अपनी संस्कृति से अवगत करा रहे है। इसी के परिणामस्वरुप आज दुनिया कई कोनों में बसे भारतीय अपने सभी तीज-त्यौहार विदेशी दोस्तों के साथ बड़े धूम-धाम से मनाते हैं।

निष्कर्ष :

प्रवासी साहित्य पर आज विचार-विमर्श हो रहा है। कड़े परिश्रम के बाद प्रवासी साहित्यकार अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुए है। भारतीय अस्मिता को जीवित रखने का काम इन लोगों ने किया है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में सर्वाधिक योगदान इनका ही रहा है। लेकिन अब जरुरी है कि इन्हें हिंदी की मुख्यधारा से जोड़ना होगा। प्रवासी साहित्य को संपत्ति मानकर उसकी रक्षा करनी होगी। हर देश में तथा भारत के हर पुस्तकालय में प्रवासी भारतीय पुस्तकें उपलब्ध कराती होगी। ताकि पूरे विश्व से लोग आकर अनुसंधान करेंगे। प्रवासी साहित्य हिंदी साहित्य का ही महत्वपूर्ण हिस्सा है यह जागरुकता जगानी होगी। साथ ही अजनबी भाषा-परिवेश में रहकर भी वे अपनी पहचान बनाए हुए है

इस बात की सराहना करनी होगी। क्योंकि आज हम स्वजनों के बीच रहकर भी अजनबी बनते जा रहें है। प्रवासी भारतीयों का आदर्श सम्मुख रख हमें पथ पर चलना होगा तभी हम हिंदी के सच्चे सपूत बन पाएंगे।

संदर्भ :

1. https://www.garbhanal.com
2. https://hindi.webdunia.com
3. https://www.garbhanal.com
4. https://charagedil.wordpress.com
5. https://charagedil.wordpress.com
6. एम. फीरोज खान – प्रवासी महिला कथाकार, सारंग प्रकाशन, वाराणसी, प्र.सं. 2018, भूमिका से।